कर्नाटक सरकार

उपनिदेशक कार्यालय,विद्यालय शिक्षा एवं साक्षरता विभाग,हासन जिला

दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए प्रभावशाली परीक्षा परिणाम हेतु शीघ्र स्मरण वाचन पुस्तिका

दिशा दीप

तृतीय भाषा हिंदी प्रश्नगुच्छा

प्राक्कथन

कोविड 19 के वापसी के बाद पुन: पूर्व निश्चित नियमानुसार दसवीं कक्षा के लिये परीक्षा चल रही है। अधिगम को नई दिशा देकर बच्चों की पढ़ाई को परखने का उत्तरदायित्व शिक्षा बोर्ड पर है । आसानी से बच्चे लघु पुस्तिका के रूप में इसके अंतर्गत निहित पाठांशों को पढ़ने से वार्षिक परीक्षा रूपी नदी का किनारा पार आसानी से करें इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर इस पुस्तक के द्वारा कोशिश की गयी है।

रचनात्मक शिक्षा की रूपरेखा के अनुसार बच्चों के स्कूली जीवन को बाहरी जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतर बढ़ाती जा रही है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास कर रहे हैं। शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि छात्र न केवल विषय विशेष में पारंगत हो वरन् अपनी समस्त अभिव्यक्तियों और विचारों को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम बने। आज तक शिक्षा की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए शिक्षा विभाग ने शिक्षकों के लिए अनेक क्षमतावर्धन कार्यशालाओं का आयोजन किया है । फिर भी एन.सी.एफ.–2005 के आशयों को पूरा करने में हम पीछे रह गये हैं

बदलती हुई परीक्षा की प्रक्रिया की परिप्रेक्ष्य में जिला के समस्त अध्यापक बन्धुओं को प्रश्नपत्र तथा आधार पत्रक को समझने मे सशक्त बनाने के साथ साथ उन्हे मानसिक रूप से बदलती हुई परिस्थिति में अपनी स्थिति को सुधारने में सक्षम बनाना शिक्षा विभाग का दायित्व बनता है । पढ़ाई के बिना हम जीवन के कोई भी क्षेत्र पर सफलता से चढ़ाई नहीं करते। उत्तीर्ण हुए बिना हम अवतीर्ण नही हो सकते 'सा विद्या या विमुकतये' परीक्षा का फल हर हाल में सबको मिले।

इस पुस्तक का नाम 'दिशादीप ' इसलिए रखा गया है प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए उसको पाने की उम्मीद और दिशा में रहकर भरसक प्रयास करने से अपेक्षित परिणाम को जरूर प्राप्त किया जाता है । इस पुस्तक को बनाने में जिन लोगो ने सहयोग दिया है वे भी सफलता की सीढी तक परीक्षा परिणाम को ले जानेवाले वास्तविक हकदार है

श्री प्रकाश के. एस.

उपनिदेशक, विद्यालय साक्षरता विभाग

हासन

परिकल्पना एवं मार्गदर्शन

माननीय के. एस. प्रकाश, उपनिदेशक, विद्यालय साक्षरता विभाग ,हासन

सलाह एवं परामर्श

श्री मोहन कुमार, शिक्षाधिकारी
उपनिदेशक कार्यालय,हासन

श्री तम्मण्ण गौड़ा, शिक्षाधिकारी
उपनिदेशक कार्यालय,हासन

रचना समिति के नोडल अधिकारी

श्री सिद्देश.एम. ए. मुख्य शिक्षक

सरकारी हाईस्कूल,बागिवालु,होलेनरसीपुर(त)हासन (जि)

रचना समिति के सदस्य

श्री शशिधर सिंह, सरकारी पदवी पूर्व कालेज(माध्यमिक विभाग)हारन हल्ली,अरसीकेरे (त) हासन (जि)	श्री जयण्ण, सरकारी माध्यमिक विद्यालय चंगड़ी हल्ली, सकलेशपुर(त) हासन (जि)
श्री सण्णलिंगे गौड़ा, सरकारी माध्यमिक विद्यालय कट्टाया, हासन (त)	श्री शिवकुमाराचारी ,सरकारी पदवी पूर्व कालेज (माध्यमिक विभाग) जोडीगुब्बी, होलेनरसीपुर(त) हासन(जि)
श्री सतीश कुमार, सरकारी पदवीपूर्व कालेज (माध्यमिक विभाग) होलेनरसीपुर (त) हासन(जि)	श्री. विजय कुमार, सरकारी माध्यमिक विद्यालय मणकत्तूर, आरसीकेरे (त)

विषय सूची

- आठ अंक प्राप्त कराने वाले पाठांत के सभी मुख्य व्याकरणांश संधि, समास, विलोम शब्द, प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया शब्द, मुहावरे ,अन्य लिंग, अन्य वचन, पर्यायवाची शब्द, कारक,विराम चिह्न आदि।

- पाठ्यपुस्तक की अनुक्रमणिका सूची सहित एक अंक तथा अनुरूपता के संभवनीय प्रश्न ।

- दो अंक पाने में सहायक संभवनीय प्रश्न तथा उत्तर ।

- तीन अंक प्राप्त करने सहायक संभवनीय प्रश्नोत्तर और दोहाओं का भावार्थ ।

- तीन अंक प्राप्त करानेवाले संभवनीय अनुवाद के उदाहरण कन्नड अनुवाद सहित।

- पाँच अंक प्राप्ति के संभवनीय पत्र लेखन का उदाहरण ।

- चार अंक प्राप्त करानेवाले संभवनीय निबंध लेखन के उदाहरण।

- चार अंक प्राप्त करानेवाली संभवनीय कंठस्थ कविता।

व्याकरण

देखिए पढिए लिखिए 8 अंक पाइए

विलोम शब्द			
➢ शाम x सुबह	पास x दूर	ज्ञान x अज्ञान	चढ़ना x उतरना
➢ खरीदना x बेचना	गम x खुशी	जीत x हार	समान x असमान
➢ बहुत x कम	भीतर x बाहर	सीमित x असीमित	दया x निर्दया
➢ अच्छा x बुरा	चढ़ना x उतरना	तोड x जोड	धर्म x अधर्म
➢ शिक्षित x अशिक्षित	निकट x दूर	बहुत x कम	विकार x अविकार
➢ आवश्यकxअनावश्यक	विश्वास x अविश्वास	सफल x असफल	विनय x अविनय
➢ गरीब x अमीर	प्रिय x अप्रिय	बडा x छोटा	बढ़ना x घटना
➢ रात x दिन	स्वस्थ x अस्वस्थ	लेना x देना	स्थिर x अस्थिर
➢ संदेह x निस्संदेह	बलवान x बलहीन	आना x जाना	मुमकिन x नामुमकिन
➢ साफ x मलीन	बुद्धिमान x बुद्धिहीन	शांति x अशांति	वरदान x अभिशाप
➢ विश्वास x अविश्वास	शक्तिमान x शक्तिहीन	विवेक x अविवेक	दुरुपयोग x सदुपयोग
➢ सहयोग x असहयोग	दयावान x दयाहीन	थोडा x ज्यादा	उल्टा x सीधा
➢ हानि x लाभ	उत्तीर्ण x अनुत्तीर्ण	उतार x चढ़ाव	आरोहण x अवरोहण
➢ गुण x दोष	उपयोग x अनुपयोग	सदाचार x दुराचार	ठंडा x गरम
➢ आज x कल	उपस्थिति x अनुपस्थिति	आयात x निर्यात	परिश्रम x आलस्य
➢ नवीन x प्राचीन	उचित x अनुचित	अपना x पराया	सुंदर x कुरूप
➢ ईमान x बेईमान	धन x निर्धन	काटना x जोडना	विदेश x स्वदेश
➢ होश x बेहोश	जन x निर्जन	चैन x बेचैन	नीचे x ऊपर
➢ आगमन x निर्गमन	बल x निर्बल	खबर x बेखबर	मुश्किल x आसान
➢ सज्जन x दुर्जन	सजीव x निर्जीव	जवाब x सवाल	लंबी x छोटी
➢ दोस्त x दुश्मन	आय x व्यय		
	आगे x पीछे		

अन्य वचन			
➢ चीजें - चीज		पैसा - पैसे	जिंदगी -जिंदगियाँ
➢ घर - घर	गमला - गमले	कौआ -कौए	जानकारी –जानकारियाँ
➢ रूपया - रूपए	कमरा - कमरे	फूल - फूल	कर्मचारी -कर्मचारियाँ
➢ आँखें - आँख	दायरा - दायरे	पंजा - पंजे	उँगली -उँगलियाँ
➢ रास्ता – रास्ते	कंप्यूटर - कंप्यूटर	परदा -परदे	खिडकियाँ -खिडकी
➢ फल - फल	दोस्त - दोस्त	खबर -खबरें	कहानी - कहानियाँ
➢ पूँछ - पूँछ	कपडा - कपडे	कुत्ता - कुत्ते	मछली - मछलियाँ

रेवडी - रेवडियाँ	चादर - चादरें	पोता - पोते	लिफाफा - लिफाफे
घर - घर	गुफा - गुफाएँ	बेटा - बेटे	घोंसला - घोंसले
बात - बातें	पत्ती - पत्तियाँ	पेड - पेड	किताब - किताबें
वस्तु-वस्तुएँ	बेटी - बेटियाँ	लोग - लोग	जगह - जगहें
युग - युग	नाती - नातियाँ	दूकान - दूकानें	डिब्बा - डिब्बे
संस्कृति -संस्कृतियाँ	हड्डी - हड्डियाँ	रस्सी - रस्सियाँ	चिट्ठी - चिट्ठियाँ
पद्धति – पद्धतियाँ	मूर्ति – मूर्तियाँ	चोटी - चोटियाँ	छुट्टी - छुट्टियाँ
	नीति – नीतियाँ	नीति – नीतियाँ	नौकरियाँ - नौकरी
		पद्धति - पद्धतियाँ	
		कंपनियाँ - कंपनी	

लिंग

लेखक - लेखिका	भाई - बहन	पुरुष - स्त्री	आदमी - औरत
श्रीमान - श्रीमती	माँ - बाप	बेटा - बेटी	हाथी - हथिनी
मयूर - मयूरी	डॉंक्टर - डॉंक्टर	भैंस - भैंसा	थैला - थैली
कुत्ता – कुत्तिया	पंडिताइन - पंडित	शेर - शेरनी	मोर – मोरनी
लडका - लडकी	दुबला - दुबली		पतला - पतली
बच्चा - बच्ची			

पर्यायवाची /समानार्थक शब्द

गात = शरीर ,देह	नवीन = नया	दोस्त = मित्र
आहार = भोजन , खाना	नर = पुरुष, आदमी	भेंट = उपहार , तोफा
विस्मय = अचरज , आश्चर्य	वारि = नदी	पहाड = गिरि , पर्वत
हिम्मत = धैर्य , साहस	महिला = स्त्री , नारी	चोटी = शिखर
खोज = तलाश , ढूँढ	नजदीक = समीप , पास	पेड = वृक्ष , तरु
दुनिया = संसार , प्रपंच	आगार = घर , गृह	सुबह = प्रभात
कर = हाथ , हस्थ	मकान = घर , आलय , धाम	

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया शब्द

चिपका - चिपकाना	पढना - पढाना
लिखना - लिखाना	सुनना – सुनाना
मिलना - मिलाना	करना - कराना
चलना - चलाना	जागना – जगाना
खेलना - खिलाना	भेजना – भिजाना
देना - दिलाना	चलना – चलाना
सोना - सुलाना	बैठना – बिठाना
रोना - रुलाना	ठहरना - ठहराना
धोना – धुलाना	देखना - दिखाना

➢ खोलना - खुलाना	➢ लौटना – लौटाना
➢ पीना - पिलाना	➢ उतरना - उतारना
➢ सीना - सिलाना	➢ पहनना – पहनाना
➢ माँगना - मँगाना	➢ बनना - बनाना
➢ बाँटना - बँटाना	➢ गिरना – गिराना
➢ माँझना - मँझाना	➢ लगना – लगाना
➢ जाँचना - जँचाना	➢ सीखना – सिखाना

मुहावरे

1.पौ फटना – प्रभात होना	8 अँगूठा दिखाना – साफ इनकार करना
2 काम आना – काम में आना	9 नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना ,
3 आँख खुलना - ज्ञानोदय होना	10 .चिंगारियाँ सुलगना – अत्यंत क्रोधित होना
4 आँखें लाल होना – क्रोधित होना	11 होशहवास उडना – घबरा जाना
5 शुक्रिया अदा करना –धन्यवाद देना	12. हिम्मत न हरना – धीरज रखना
6 फूला नहीं समाना – बहुत खुश होना	13 बीडा उठाना – जिम्मेदारी लेना
7 टस से मस न होना – विचलित न होना	

विराम चिन्ह

1. अल्प विराम .... (,)	4. प्रश्न चिह्न ....(?)
2. अर्ध विराम ....(;)	5. विस्मयादिबोधक चिह्न............... (!)
3. पूर्ण विराम ....(I)	6. योजक चिह्न ....(-)

कारक

कर्ता कारक	ने	अपादान कारक	से
कर्म कारक	को	संबंध कारक	का के की
करण कारक	से	अधिकरण कारक	में पर
संप्रदान कारक	के लिए , के वास्ते	संबोधन कारक	हे, अजि,अरे, अहो

संधि

दीर्घ संधि आ .ई .ऊ	**गुण संधि ए. ओ , अर**	**वृद्धि संधि ऐ. औ**	**यण संधि [संयुक्ताक्षार]**	**अयादि संधि [मध्य अक्षर]**	**व्यंजन संधि [व्यंजन+स्वर, व्यंजन]**
ा ो ू आ.ई.ऊ	े ो ए.ओ.अर	ै ौ ऐ.औ	[त्य. न्व. त्र]	[य.या.यि /व वा वि]	क =ग, त =द, प =ब च =ज

विद्यालय	गजेंद्र	एकैक	अत्यधिक	चयन	दिग्गज
धर्मात्मा	नरेंद्र	मतैक्य	अत्यंत	गायक	अजंत
विद्यार्थी	रमेश	सदैव	इत्यादि	नायिका	षाडानन
गौरीश	वार्षिकोत्सव	लोकैक	न्यून	गायिका	सद्वाणी
कवींद्र	चंद्रोदय	महैश्वर्य	मन्वंतर	नयन	अब्धि
रजनीश	नवोदय	परमौज	स्वागत	भवन	तन्मय
परीक्षा	अरुणोदय	वनौषध	लघ्विच्छा	पवन	उद्गम
लघूत्तर	सप्तर्षि	महौज	अन्वित	पावक	तद्रूप
भानूदय	देवर्षि	महौदर्य	पित्रनुमति	पावन	शरच्चंद्र
भूर्जा	महोत्सव		मात्रानंद	नाविक	तट्टिका

समास					
अव्ययी भाव समास	**कर्मधारय समास**	**तत्पुरुष समास**	**द्विगु समास**	**द्वंद्व समास**	**बहुव्रीहि समास**
1 आजन्म	1 सद्धर्म	1 स्वर्ग प्राप्त	1 चौराह	दो-चार	घनश्याम
2 बेखटके	2 पीतांबर	2 ग्रंथकार	2 बारहमासा	हरे – भरे	त्रिनेत्र
3 भरपेट	3 चंद्रमुख	3 अकालपीडित	3 पंसेरी	सुख – दु:ख	दशानन
4 यथा संभव	4 मुखचंद्र	4 रोगग्रस्त	4 दोपहर	माता – पिता	नीलकंठ
5 अनजाने	5 करकमल	5 देवबलि	5 चोमासा	राधा – कृष्ण	चतुर्भुज
6 बेहोश	6 नीलापरदा	6 वरदक्षिणा	6 त्रिवेणि	अमीर – गरीब	चक्रपाणि
		7 धर्मविमुख	7 पंचवटी	पति – पत्नी	लंबोदर
		8 गंगाजल	8 पंद्रह मिनट	दुबला-पतला	वृकोदर
		9 गंगास्नान			

प्रतिदिन मुझको देखें,लिखें तो दो अंक तो जरूर पा सकें

पाठ	**विधा**	**लेखक**
मातृभूमि	**कविता**	**भगवती चरण वर्मा**
कश्मीरी सेब	**कहानी**	**प्रेमचंद**

गिल्लू	रेखाचित्र	महादेवी वर्मा
अभिनव मनुष्य	कविता	रामधारीसिंह "दिनकर"
मेरा बचपन	आत्मकथा	डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
बसंत की सच्चाई	एकांकी	विष्णु प्रभाकर
तुलसी के दोहे	दोहा	गोस्वामी तुलसीदास
इंटरनेट क्रांति	निबंध	संकलित
ईमानदारों के सम्मेलन में	व्यंग्य रचना	हरिशंकर परसाई
दुनिया में पहला मकान	लेख	डॉ. विजया गुप्ता
समय की पहचान	कविता	सियारामचरण गुप्त
रोबोट	कहानी	डॉ. प्रदीप मुख्योपाध्याय `आलोक`
महिला की साहस गाथा	व्यक्ति परिचय	संकलित
सूर श्याम	पद	सूरदास
कर्नाटक संपदा	निबंध	संकलित
बाल-शक्ति	लघु नाटिका	जगतराम आर्य
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती	कविता	सोहनलल द्विवेदी

दो अंकवाले सभवनीय प्रश्न

भारत माँ ने गांधी, बुद्ध और राम जैसे व्यक्तियों को जन्म दिया है । इसलिए अमरों की जननी कहते हैं ।

- **भारत माँ का प्रकृति-सौंदर्य नयन मनोहर है ।**
- **मातृभूमि के हरे-भरे सुहाने खेत प्रकृति की शोभा बढाते हैं ।**
- **यहाँ फल-फूलों से युक्त बाग-बगीचे तथा वन हैं ।**
- **इस धरती में खनिजों की अपार संपदा है ।**
- **भारत माता मुक्त हस्त से सुख़-संपति और धन-धाम को बाँट रही है ।**
- **भारत माँ के एक हाथ में न्याय पताका है दूसरे हाथ में ज्ञान दीप है । ये दोनो संसार के रूप बदलने में सक्षम हैं ।**
- **इसलिए जग का रूप बदलने के लिए विनती करते हैं ।**
- **वे चाहते हैं -जय हिंद का नाद सकल नगर और ग्राम में गूँज उठें ।**

- भारत माँ के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन कीजिए ।

भारत माँ की प्रकृति हरे भरे खेतों से और फल फूलों से भरे वन – उपवन से युक्त हरियाली से सुशोभित है। इतना ही नहीं, व्यापक खनिजों से भरा धन राशी से भी भारत माँ सुशोभित है। भारत माता एक हाथ में न्याय पताका तथा दूसरे हाथ में ज्ञान – दीप को धारण कर बहुत ही सुन्दर सुशोभित हो रही है। भारत माँ प्रकृति माँ बन कर सुशोभित है।

- समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिए ?

  एक पल को भी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। एक- एक-पल से ही जीवन बनता है । इसलिए काम कोई भी हो उसे बिना किसी बहाने बनाये उसी समय पूरा मन लगाकर करना चाहिए। आलस्य त्याग कर, समय को अमूल्य धन मानकर कार्य करने से जीवन सफल होता है। हमें काम करने का जो अवसर प्राप्त होता है उसे व्यर्थ जाने नहीं देना चाहिए।

- ‘प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन’ :इस पंक्ति का आशय समझाइए।
  ‘प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन’ इस पंक्ति का ’आशय है कि आज मनुष्य प्रकृति पर विजय पाया है । प्रकृति के संपत्ति को अपने वश में कर लिया है। प्रकृति में पानी, पवन, विद्‌युत सब पर मनुष्य ने अपना अधिकार स्थापित किया है।

दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय क्या है?

कवि दिनकर के अनुसार आज मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। यह उसकी साधना है, पर मानव-मानव के बीच स्नेह का बाँध बाँधना मानव की सिद्धि है। दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय यह है कि आपस में भाई-चारा बढ़ाये, आपसी बंधनों को तोड़े और मानव से प्रेम

करे वही सच्चा ज्ञानी, विद्वान मानव है। जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़कर आपस की दूरी को मिटाए, वही मानव कहलाने का अधिकारी होगा।

- **सौरमंडल का सबसे बडा ग्रह बृहस्पति है ।**
- **शनि सौरमंडल का दूसरा बडा ग्रह है ।**
- **शनि सूर्य का पुत्र है ।**
- **शनि ग्रह अत्यंत धीमि गति से चलनेवाला है इसलिए शनैःचर कहते हैं।**
- **शनि ग्रह के चारों ओर वलय(गोले) दिख़ाई देते हैं । इसलिए शनि को सौरमंडल के सबसे सुंदर ग्रह कहते हैं ।**
- **शनि का निर्माण हाइड्रोजन, हीलियम,मीथेन और एमोनिया गैसों से बना है ।**
- **शनि ग्रह सूर्य से अधिक दूर है ।**
- **शनि के वायुमंडल का तापमान शून्य के नीचे सेंटिग्रेड के आसपास रहता है इसलिए शनि को ठंडा ग्रह कहा जाता है**

❖ सत्य क्या होता है और उसका रूप कैसा होता है?

सत्य बहुत भोला-भाला सीधा –सादा जो कुछ भी आँखों से देखे, बिना नमक मिर्च लगाये बोल दिया जाए ,यही तो सत्य है। सत्य दृष्टि का प्रतिबिंब है, ज्ञान की प्रतिलिपी है और आत्मा की वाणी है।

❖ शास्त्र में सत्य बोलने का तरीका कैसे समझाया जाता है?

किसी को परेशान करने, दुखी करने के उद्देश्य से सत्य बोलना नहीं चाहिए। सत्य बोलने का तरीका शास्त्र में इस तरह समझाया गया है कि सत्यं ब्रूयात्‘, प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम ’ अर्थात् सच बोलो, जो दूसरों को प्रिय लगे, अप्रिय सत्य मत बोलो।।

दोहाओं का सारांश / भावार्थ :

1) मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ॥

तुलसीदास मुख अर्थात् मुँह और मुखिया दोनों के स्वभाव की समानता दर्शाते हुए लिखते हैं कि मुखिया को मुँह के समान होना चाहिए। मुँह खाने-पीने का काम अकेला करता है, लेकिन वह जो खाता-पीता है उससे शरीर के सारे अंगों का पालन-पोषण करता है। तुलसी की राय में मुखिया को भी ऐसे ही विवेकवान होना चाहिए कि वह काम इस तरह से करें उसका फल समाज के सब लोगों को समान रूप से मिले।

2) जड़ चेतन, गुण-दोषमय, विस्व कीन्ह करतार।
संत-हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार ॥

तुलसीदास संत की हंस पक्षी के साथ तुलना करते हुए उसके स्वभाव का परिचय देते हैं – सृष्टिकर्ता ने इस संसार को जड़, चेतन और गुण-दोष से मिलाकर बनाया है। अर्थात्, इस संसार में अच्छे-बुरे (सार-निस्सार), समझ-नासमझ के रूप में अनेक गुण-दोष भरे हुए हैं। हंस पक्षी जिस प्रकार दूध में

निहित पानी को छोड़कर केवल दूध मात्र पी लेता है, उसी प्रकार संत भी हंस की तरह संसार में निहित गुण-दोषों में केवल गुणों को ही अपनाते हैं।

3) दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छाँडिये, जब लग घट में प्राण ॥

तुलसीदास ने स्पष्टतः बताया है कि दया धर्म का मूल है और अभिमान पाप का। इसलिए कवि कहते हैं कि जब तक शरीर में प्राण हैं, तब तक मनुष्य को अपना अभिमान छोड़कर दयावान बने रहना चाहिए।

4) तुलसी साथी विपत्ति के विद्या विनय विवेक।
साहस सुकृति सुसत्यव्रत राम भरोसो एक ॥

तुलसीदास जी कह रहे हैं कि मनुष्य पर जब विपत्ति पड़ती है तब विद्या, विनय तथा विवेक ही उसका साथ निभाते हैं। जो राम पर भरोसा करता है, वह साहसी, सत्यव्रती और सुकृतवान बनता है।

5) राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरौ जो चाहसी उजियार ॥

तुलसीदास जी कहते हैं कि जिस तरह देहरी पर दिया रखने से घर के भीतर तथा आँगन में प्रकाश फैलता है, उसी तरह राम-नाम जपने से मनुष्य की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है।

कन्नड अनुवाद के संभावनीय वाक्यांश

कन्नड में अनुवाद (प्रश्न संख्या: 33 – ಪ್ರಶ್ನೆ ಸಂಖ್ಯೆ: 33)

क्र.सं.	वाक्य	ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಅನುವಾದ
1	आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों में विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है। टोमाटो को पहले कोई भी न पूछता था। अब टोमाटो भोजन का आवश्यक अंग बन गया है।	ಇಂದು ಶಿಕ್ಷಿತ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ವಿಟಮಿನ್ ಮತ್ತು ಪ್ರೋಟೀನ್ ನ ಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ ವಿಚಾರ ಮಾಡುವ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯಾಗಿದೆ. ಟೊಮೊಟೊವನ್ನು ಮೊದಲು ಕೇಳುವವರೇ ಇರಲಿಲ್ಲ.

		ಈಗ ಟೊಮೊಟೊ ಭೋಜನದ ಅವಶ್ಯಕ ಅಂಗವಾಗಿದೆ.
2	गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अत: गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया, न वह बाहर गया।	ಅಳಿಲುಗಳ ಜೀವನದ ಅವಧಿ ಎರಡು ವರ್ಷಕ್ಕಿಂತ ಅಧಿಕ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಆದ್ದರಿಂದ ಗಿಲ್ಲು ನ ಜೀವನಯಾತ್ರೆಯ ಅಂತ್ಯ ಬಂದೇ ಬಿಟ್ಟಿತು. ದಿನವಿಡೀ ಅದು ಏನನ್ನೂ ತಿನ್ನಲಿಲ್ಲ, ಹೊರಗೆ ಹೋಗಲಿಲ್ಲ.
3	बचपन में मेरे तीन पक्के दोस्त थे – रामानंद शास्त्री, अरविंदन और शिवप्रकाश। ये तीनों ही ब्राह्मण परिवारों से थे। रामानंद शास्त्री तो रामेश्वरम मंदिर के सबसे बडे पुजारी पक्षी लक्ष्मण शास्त्री का बेटा था।	ಬಾಲ್ಯದಲ್ಲಿ ನನಗೆ ಮೂವರು ಆಪ್ತ ಮಿತ್ರರಿದ್ದರು – ರಾಮಾನಂದ ಶಾಸ್ತ್ರಿ, ಅರವಿಂದನ್ ಮತ್ತು ಶಿವಪ್ರಕಾಶ್. ಈ ಮೂವರೂ ಬ್ರಾಹ್ಮಣ ಪರಿವಾರದವರಾಗಿದ್ದರು. ರಾಮಾನಂದ ಶಾಸ್ತ್ರಿ, ರಾಮೇಶ್ವರಂ ನ ದೇವಾಲಯದ ಪ್ರಧಾನ ಅರ್ಚಕ ಪಕ್ಷಿ ಲಕ್ಷ್ಮಣಶಾಸ್ತ್ರಿ ಯವರ ಮಗನಾಗಿದ್ದನು.
4	बिछेंद्री का जन्म एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था। पिता किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में बिछेंद्री तीसरी संतान है। बिछेंद्री के बडे भाई को पहाडों पर जाना अच्छा लगता था।	ಬಿಛೇಂದ್ರಿಯ ಜನನ ಒಂದು ಸಾಮಾನ್ಯ ಭಾರತೀಯ ಪರಿವಾರದಲ್ಲಿ ಆಗಿತ್ತು. ತಂದೆ ಕಿಶನ್ ಪಾಲ್ ಸಿಂಗ್ ಮತ್ತು ತಾಯಿ ಹಂಸಾದೇಈ ನೇಗಿಯವರ ಐದು ಜನ ಮಕ್ಕಳಲ್ಲಿ ಬಿಛೇಂದ್ರಿ ಮೂರನೆಯವಳು. ಬಿಛೇಂದ್ರಿಯ ಅಣ್ಣನಿಗೆ ಬೆಟ್ಟಗಳ ಮೇಲೆ ಹೋಗುವುದೆಂದರೆ ತುಂಬಾ ಇಷ್ಟ.
5	कर्नाटक में कन्नड भाषा बोली जाती है और इसकी राजधानी बेंगलूरु है। यहाँ देश-विदेश के लोग आकर बस गये हैं। बेंगलूरु शिक्षा का ही नहीं, बल्कि बडे-बडे उद्योग-धंधों का भी केंद्र है।	ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ಮಾತನಾಡಲ್ಪಡುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಇದರ ರಾಜಧಾನಿ ಬೆಂಗಳೂರು ಆಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ದೇಶ-ವಿದೇಶದ ಜನರು ಬಂದು ನೆಲೆಸಿದ್ದಾರೆ. ಬೆಂಗಳೂರು ಶಿಕ್ಷಣದ ಕೇಂದ್ರವಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ ದೊಡ್ಡ ದೊಡ್ಡ ಕೈಗಾರಿಕೆಗಳ ಕೇಂದ್ರವೂ ಆಗಿದೆ.
	कर्नाटक में चंदन के पेड विपुल मात्रा में हैं। इसलिए कर्नाटक को 'चंदन का आगार'	ಕರ್ನಾಟಕದಲ್ಲಿ ಗಂಧದ ಮರಗಳು ಅಧಿಕ ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿವೆ. ಆದ್ದರಿಂದ

6	कहते हैं। यहाँ चंदन का तेल, साबुन तथा कलाकृतियाँ भी बनायी गयी हैं।	ಕರ್ನಾಟಕವನ್ನು 'ಚಂದನದ ಆಗರ' ಎಂದು ಕರೆಯುತ್ತಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಗಂಧದ ಎಣ್ಣೆ, ಸಾಬೂನು ಮತ್ತು ಕಲಾಕೃತಿಗಳೂ ಸಹಾ ತಯಾರಾಗುತ್ತವೆ.
7	शनि हमारे सौरमंडल का एक अद्भुत और सुंदर ग्रह है। किसी भी ग्रह को शुभ या अशुभ समझने का कोई भौतिक कारण नहीं है। शनि तो हमारे सौरमंडल का सबसे खूबसूरत ग्रह है।	ಶನಿ ಸೌರಮಂಡಲದ ಒಂದು ಅದ್ಭುತ ಮತ್ತು ಸುಂದರ ಗ್ರಹ. ಯಾವುದೇ ಗ್ರಹವನ್ನು ಶುಭ ಅಥವಾ ಅಶುಭ ಎನ್ನಲು ಯಾವುದೇ ಭೌತಿಕ ಕಾರಣ ಇಲ್ಲ. ಶನಿಯಂತೂ ನಮ್ಮ ಸೌರಮಂಡಲದ ಅತ್ಯಂತ ಸುಂದರ ಗ್ರಹ.
८	प्रकृति हमारी माता है। इसलिए हमें प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय करना नहीं चाहिए। अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखना भी हमारा दायित्व है।	ಪ್ರಕೃತಿ ನಮ್ಮ ತಾಯಿ. ಆದ್ದರಿಂದ ನಾವು ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ಸಂಪನ್ಮೂಲಗಳನ್ನು ಅಪವ್ಯಯ ಮಾಡಬಾರದು. ನಮ್ಮ ಪರಿಸರವನ್ನು ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿಡುವುದು ನಮ್ಮ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯಾಗಿದೆ.
9	कर्नाटक के अनेक साहित्यकारों ने सारे संसार में कर्नाटक की कीर्ति फैलायी है। वचनकार बसवण्णा क्रांतिकारी समाज सुधारक थे।	ಕರ್ನಾಟಕದ ಅನೇಕ ಸಾಹಿತ್ಯಕಾರರು ಇಡೀ ವಿಶ್ವದಾದ್ಯಂತ ಕರ್ನಾಟಕದ ಕೀರ್ತಿಯನ್ನು ಹರಡಿದ್ದಾರೆ. ವಚನಕಾರ ಬಸವಣ್ಣ ಕ್ರಾಂತಿಕಾರಿ ಸಮಾಜ ಸುಧಾರಕರಾಗಿದ್ದರು.

पत्र लेखन और निबंध

नागरिक के कर्तव्य **4 marks**

- नागरिक का अर्थ
- कर्तव्य / लक्षण
- नागरिक और सरकार
- उपसंहार

प्रस्तावना :

हमारा देश भारत है । भारत देश में अलग-अलग ढंग के वेश-भूषा, भाषा, संस्कृति, खान-पान और रहन-सहन हैं। उसके साथ अच्छे नागरिक की आवश्यकता भी है।

नागरिक का अर्थ :

देश में सच्चे और ईमानदार परिश्रमी नागरिकों की आवश्यकता है। नव निर्माण के लिए देश में बने नागरिक देश की समृद्धि या निर्माण के प्रतीक होते हैं । हमारा देश पहले गाँवों से भरा था। कृषि हमारा मुख्य काम था। कृषि कार्य करते हुये नव निर्माण के लिए जो परिश्रम कर रहा है वही नागरिक है।

कर्तव्य / लक्षण :

अच्छे नागरिक का गुण या लक्षण यह होना चहिए कि देश के लिए ईमानदार और देश की रक्षा, भाषा, संस्कृति आदि को आदर भावना से देखना चाहिए । देश में होनेवाली हानियों को दूर करना ,अच्छे विचारों को अपनाकर देश की रक्षा के लिए तत्पर रहना चाहिए । इसलिए समाज को योग्य नागरिकों की जरूरत है।

अच्छा नागरिक बनने के लिए योग्य काम करना चाहिए । मनुष्य में निहित अच्छे गुणों की प्रशंसा करना, ईर्ष्या और द्वेष को दूर करना चाहिए । खुद को आगे बढ़ाने की कोशिश में मानवीय मूल्यों को नहीं कुचलना चाहिए।

समाज का सुधार व्यक्तियों पर अवलंबित है । व्यक्तियों के भला या बुरा होने से हम समाज को भला या बुरा कहते हैं। जो नागरिक दूसरों को उपदेश न देकर खुद अपने चरित्र और स्वभाव पर चलते हैं ऐसे नागरिकों से समाज का सुधार होता है।

नागरिक और सरकार :

आज़ादी के पहले के नेता लोगों के सामने केवल आज़ादी को पाने का उद्देस्य था । वे आजादी की लड़ाई में कूद पडते थे। अच्छे नागरिक सरकार के आदेशों को स्वीकार कर पालन करते हैं। सरकार के साथ जुड़कर अच्छे काम-काज करते हैं।

उपसंहार :

देश की उन्नति के लिए सच्चे-अच्छे नागरिकों की बहुत आवश्यकता है। इसलिए हम अपने देश,भाषा, संस्कृति, संपदा को रक्षा करते हुए काम करें तब हम अच्छे नागरिक बनते हैं।

ख) वन महोत्सव

- अर्थ
- महत्व
- संरक्षण
- उपसंहार

अर्थ :

आदिकाल से मनुष्य प्रकृति की गोद में पलकर बड़ा हुआ है। प्रकृति की अपार संपदा मानव जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। मानव का जीवन वनों पर आश्रित है। मनुष्य को वनों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से लाभ है। वन हमारी आर्थिक संपदा के स्रोत है।वनों से हमें कच्चा माल प्राप्त होता है, वनों से अधिक मात्रा में इमारती लकड़ी, वनस्पति, आदि मिलते हैं। विभिन्न जड़ी-बूटियों, सुगंधित पदार्थ बनाने के साधन और कागज का सामान सभी वनों से मिलते हैं ।

महत्व :

प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यावरण का आधार वन ही है। वन वर्षा में सहायक होते हैं तथा वायु को शुद्ध करते हैं । वेदों में प्रकृति की आराधना की गई है। आज भी हमारे देश में आँवला,नीम, केला, पीपल और तुलसी की पूजा की जाती है। पृथ्वी को हरा-भरा, सुंदर और आकर्षक बनाने में वृक्षों का बड़ा योगदान है।

संरक्षण :

सभ्यता के विकास के साथ-साथ वनों की कटाई अधिक होती जा रही है। जनसंख्या वृद्धि के कारण भी वनों का नाश होता जा रहा है। वृक्षों की उपयोगिता के बारे में वैज्ञानिकों से सुझाव लेकर, अधिक वृक्ष लगाये जा रहे हैं। उनके अनुसार भारत के कुल भू-भाग का एक तिहाई भाग में वन होना चाहिए। सन् 1950 में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और साहित्यकार कन्हैयालाल माणिकलाल

ने एक वन नीति की घोषणा की। इसमें वर्तमान वनों की रक्षा और पर्वतीय प्रदेशों में वृक्षारोपण का कार्य प्रमुख था । सरकार द्वारा वनों की कटाई पर रोक लगा दी गयी और प्रतिवर्ष वन महोत्सव मनाया जाने लगा । प्रति वर्ष जुलाई के प्रथम सप्ताह में वक्षारोपण कार्यक्रम किया जाता है। श्री सुंदरालाल बहुगुण जी के वृक्षारोपण के प्रयास और 'चिपको आंदोलन' काफी लोकप्रिय है।

वनमहोत्सव के कारण धीरे-धीरे वृक्षों की संख्या और जंगली जानवरों की संख्या में वृद्धि होने लगी। 'वन महोत्सव माह' के नाम से पूरे देश में वृक्षों को लगाया जाता है।

उपसंहार :

वृक्षों को लगाने से वनों में बढ़ोत्तरी होती है। आज अनेक सामाजिक संस्थाएँ वृक्षारोपण के लिए कई कार्यक्रम कर रही हैं। वन-जागृति से यह आशा है कि हमारी धरती फिर से हरी-भरी हो जायेगी।

इंटरेनेट

- अर्थ/मतलब
- लाभ
- हनियाँ
- उपसंहार

अर्थ :

आज का युग इंटरनेट का युग है। बडे बूढों से लेकर छोटे बच्चों तक सब पर इंटरनेट का प्रभाव पड़ा है। इंटरनेट एक प्रभावशाली साधन है। बदली तकनीक के कारण जिंदगी को देखने का नज़रिया बदल गया है। इंटरनेट अनगिनत कंप्युटरों के कई अंतर्जालों का एक दूसरे से संबंध स्थापित करने का जाल है ।

लाभ:

इंटरनेट द्वारा पल भर में बिना ज्यादा खर्च किए स्थिर चित्र या वीडियो को दुनिया के किसी भी कोने में भेजना सरल हो गया है। इंटरनेट द्वारा टिकट बुकिंग, खरीदारी, बैकिंग, चिकित्साक्षेत्र आदि में उन्नति हुई है। देश – विदेश की संस्कृति से हम आसानी से जुड़ सकते हैं।

हानियाँ:

इंटरनेट जितना उपयोगी है उतना ही वह हमें गलत मार्ग पर ले जाता है। जैसे फैरसी, बैकिंग फ्राड, हैकिंग आदि बढ़ रही है। इंटरनेट के कारण बेरोज़गारी भी बढ रही है। इंटरनेट के जाल में छोटे-छोटे बच्चे भी फँस गये हैं।

उपसंहार:

मनुष्य सामाजिक प्राणी है वह सोच – समझ सकता है। उसे सोचना चाहिए कि वह इंटरनेट का सही उपयोग करके अपनी प्रगति करें।

पर्यावरण

*** प्रस्तावना   * रक्षा के उपाय * प्रकार * उपसंहार**

प्रस्तावना :

वृक्ष, वनस्पतियों का मनुष्य के जीवन में अत्यधिक महत्व है। एक शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन के लिए एक स्वच्छ वातावरण बहुत ही ज़रूरी है। पर्यावरण के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। आज पर्यावरण मनुष्य की लापरवाही के कारण खराब हो रहा है। परिणामतः कईं समस्याएँ मनुष्य के सामने उपस्थित हो रही हैं। अगर पर्यावरण का प्रदूषण बढ़ता गया तो इस धरती पर मानव जाति के साथ-साथ समस्त जीवों के लिए भी खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

रक्षा के उपायः

पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए हमें सबसे पहले ‘जल’ को प्रदूषण से बचाना होगा। कारखानों का गंदा पानी नदियों और समुद्र में गिरने से रोकना चाहिए । वृक्षों को अधिक लगाना चाहिए ।

प्रकार : जल प्रदूषण,वायु प्रदूषण और शब्द प्रदूषण ये पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार हैं। वायु को भी प्रदूषित होने से रोकना चाहिए । कारखानों से, वाहनों से निकलने वाले धुएं से बचने के लिए दूसरे रास्ते खोजने होंगे। विद्युत से,सोलार से चलने वाले वाहनों को हमें और बढ़ाना होगा। इसी तरह ध्वनि प्रदूषण भी एक बड़ी समस्या है। हमें लोगों को इसके संबंध में जागरूक करने की ज़रूरत है। पहाड़ों एवं जंगलों की सुरक्षा पर ध्यान देने की ज़रूरत है। जंगल को कटने से बचाना होगा। खाली, बंजर जमीन पर पौधारोपण को बढ़ावा देना चाहिए ।

उपसंहार :

पर्यावरण की रक्षा जीवन की रक्षा है। आज पर्यावरण प्रदूषण दुनिया भर के लिए गंभीर समस्या है। हमें सक्रिय रूप से पर्यावरण की रक्षा में योगदान देना चाहिए। हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करना चाहिए। उपभोक्तावादी संस्कृति एवं प्रकृति के अनावश्यक उपयोग से बचना चाहिए ।

स्वच्छ भारत अभियान / स्वच्छता का महत्व।

*** अर्थ   * महत्व   * उपयोग /आवश्यकता   * उपसंहार**

अर्थ :

स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता का विशेष महत्व है। आरोग्य को नष्ट करने के जितने भी कारण हैं उनमें गन्दगी प्रमुख है। बीमारियाँ गन्दगी से ही फैलती हैं। जहाँ कूडा-कचरा जमा होता है वहाँ बीमारियाँ उत्पन्न करने वाले कीड़े उत्पन्न होते हैं। इसलिए हम अनेक रोगों से पीड़ित हैं।

महत्व :

महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने से संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने ‘स्वच्छ भारत’ का सपना देखा था। वे चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया है। इस अभियान का उद्देश्य अगले पाँच वर्ष में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि बापू की 150 वीं जयंती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके।

आवश्यकता /उद्देश्य

स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य समुदायिक शौचालय, सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस स्वच्छता प्रबंधन की सुविधा प्रदान करना है। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य पाँच वर्षों में भारत को मैदानी शौच से मुक्त बनाना है। अभियान के तहत देश में लगभग 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौंतीस हज़ार करोड़ रुपए खर्च किये जाएंगे।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक-से-अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराके स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

उपसंहार:

सरकार और जन समुदाय की सक्रिय भागीदारी के बिना किसी भी अभियान में सफलता प्राप्त नहीं होती । इसके लिए व्यापक जन चेतन कार्यक्रम चलाना होगा। स्कूली विद्यार्थीयों को अपने घर तथा पड़ोस के सभी घरों में शौचालय का होना तथा इसका उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए। घर, गली, स्कूल तथा अन्य सभी सार्वजनिक स्थानों पर गन्दगी नहीं फैलाना चाहिए तथा कूड़ेदान में ही कचरा डालना चाहिए। मैदान में शौच नहीं जाना चाहिए।

छुट्टी पत्र

प्रेषक,
नमन,
दसवीं कक्षा,
सरकारी हाईस्कूल,

हासन

सेवा में,
प्रधान अध्यापक जी,
सरकारी हाईस्कूल
हासन

मान्यवर,

विषय : तीन दिन की छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र।

सविनय निवेदन है कि मेरी बहन की शादी है इसलिए दिनांक ------ से ------ तक तीन दिन पाठशाला में हाज़िर नही रह सकता। इसलिए आप मुझे इन तीन दिन की छुट्टी देने की कृपा कीजिए।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र
(नमन)

पद्य कंठस्थ कीजिए

चार अंक पाइए

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई ,देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम ।